ANKIT
Page No.
Date

(1) वित्तीय संस्थान से आप क्या समझते हैं देश की ऐसी संस्थाएं जो आर्थिक विकास के लिए ऋण धनों के वित्तीय आवश्यकता की पूर्ति करती हैं वित्तीय संस्थान कहलाती हैं। वित्तीय संस्थाएं (i) सरकारी (ii) अर्धसरकारी या (iii) निजी हो सकती हैं।

सभी वित्तीय संस्थानों का नियंत्रण RBI द्वारा किया जाता है।

(2) राज्य की वित्तीय संस्थान को कितने भागों में बांटा गया है संक्षिप्त वर्णन करें
Ans- राज्य की वित्तीय संस्थानों को मुख्यतः दो भागों में बांटा गया है जिसे नीचे दिये चित्र द्वारा दिखाया गया

राज्यस्तरीय वित्तीय संस्थाएं

(क) गैर संस्थागत (Non-Institutional)
- (i) महाजन
- (ii) चेक-सहकार
- (iii) व्यापारी
- रिश्तेदारी एवं अन्य

(ख) संस्थागत (Institutional)
- सहकारी बैंक
- प्राथमिक सहकारी समितियां
- भूमि विकास बैंक
- व्यापारिक बैंक
- क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
- नाबार्ड एवं अन्य

(3) किसानों को ऋण अथवा साख की आवश्यकता क्यों होती है?

Ans :- किसान खेती करते हैं और खेती करने के लिए उन्हें बीज, मिट्टी की तैयारी, उर्वरक, बिजली, सिंचाई इत्यादि की आवश्यकता पड़ती है इन्हीं जरूरतों को पूरा करने के किसान को ऋण अथवा साख की आवश्यकता पड़ती है

(4) व्यापारिक बैंक कितने प्रकार की जमा राशि को स्वीकार करते हैं? संक्षिप्त विवरण दें

Ans :- व्यापारिक बैंक चार प्रकार की जमा राशि को स्वीकार करते हैं —

(i) सावधि — इसे Fixed Deposite कहा जाता है यह निश्चित अवधि के लिए राशि जमा की जाती है

(ii) चालू जमा — चालू जमा खाते में ग्राहक अपनी इच्छा अनुसार रुपया जमा कर सकता है और निकाल सकता है

(iii) बचत जमा (Saving account) — इस प्रकार के खाते में ग्राहक अपनी इच्छा अनुसार रुपया जमा कर सकता है लेकिन निकालने का अधिकार सीमित होता

(iv) आवर्ती जमा — इस प्रकार के खाते में ग्राहक प्रतिमाह एक निश्चित राशि जमा करते हैं और निश्चित अवधि बाद संचयी राशि को निकालते हैं

(5) सहकारिता से आप क्या समझते है?
उत्तर :- सहकारिता का अर्थ होता है मिल-जुलकर कार्य करना, सहकारिता के आधार पर लोग एक साथ मिलकर समान आर्थिक उद्देश्य को प्राप्त के लिए कार्य करते है।

(6) स्वयं सहायता समूह से आप क्या समझ
Ans :- स्वयं सहायता समूह 15-20 व्यक्ति (महिला) का एक अनुपचारिक समूह होता है जो अपने बचत तथा बैंको से ऋण लेकर छोटे-मोटे आर्थिक गतिविधियों को चलाकर अपने परिवार जरूरतों को पूरा करते है तथा समाज को विकसित करते है। SHG को महिला सशक्तिकरण में भी काफी योगदान कर रहा है।

(7) भारत में सहकारिता की शुरुआत किस प्रकार हुई? संक्षेप वर्णन करे
Ans :- भारत में गरीब तथा कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए व किसानों को साहूकारों पर से ऋण उपलब्ध कराने के लिए सन् 1904 में एक "सहकारी ऋण समिति अधिनियम" पारित हुआ। जिसके अनुसार गाँव के कोई भी 10 व्यक्ति मिल कर सहकारी ऋण समिति की स्थापना कर सकते थे।

(8) सूक्ष्म वित्त योजना को परिभाषित करे
Ans :- छोटे पैमाने पर गरीब एवं जरूरत मंद लोगों को स्वयं से भी स्वयं सेवा के माध्यम से कम दर पर

ANKIT
Page No.
Date

वित्त उपलब्ध कराने की व्यवस्था को सूक्ष्म वित्त योजना के नाम से जाना जाता है

Bangladesh के professor Md Yunus को इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया है।

दीर्घ स्तरीय प्रश्न

(1.) राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान किसे कहते हैं इसे कितने भागों में बांटा गया है? किन्हीं वित्तीय संस्थाओं के विषय में विस्तार से लिखिए।

निर्धारण, तनहैशन एवं प्रबंधन करने वाली वित्तीय संस्थान को राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान कहलाती है।

राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान के दो प्रमुख अंग

(i) भारतीय मुद्रा बाजार :- इसके अन्तर्गत उद्योग के लिए वित्त प्रबंधन किया जाता है जरूरत के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी बैंक उत्तरदायी होते हैं। Banking व्यवस्था में केन्द्रीय बैंक या Reserve Bank of India (RBI) भारत बैंकिंग व्यवस्था के कार्य करता है और सभी बैंकों को दिशा निर्देश देता है व्यवसायिक या वाणिज्य बैंक के द्वारा वित्त एवं Banking कार्य का संचालन होता है। गांव में सहकारी बैंक भी इसी कार्य को करते हैं।

(ii) भारतीय पूंजी बाजार :- भारतीय पूंजी बाजार मुख्यतः बड़े-बड़े उद्योगों के धन की दीर्घ कालिन उपलब्ध कराती है।

इसके अलावा चार वित्तीय संस्थाएँ (i) Share Market (ii) औद्योगिक बाजार (iii) विकास वित्त संस्थान (iv) रोट्रेडिंग वित्त कम्पनियां भी आती है। वित्तीय संस्थाएं किसी देश की रीढ़ होती है।

Note:- भारत की वित्तीय राजधानी Mumbai है। Mumbai में पूंजी बाजार का प्रधान क्षेत्र दलाल स्ट्रीट के नाम से जाना जाता है।

(2) राज्य स्तरीय संस्थागत वित्तीय स्रोत के कार्यों का वर्णन करें

Ans:- राज्य स्तरीय संस्थागत वित्तीय स्रोत के कार्यों को नीचे बताया गया है →

(i) सहकारी बैंक :- यह पंचायत, जिला तथा राज्य स्तर पर कार्य करती है। तथा अल्प-कालिन, मध्य-कालिन और दीर्घ कालिन ऋण देती है।

(ii) प्राथमिक सहकारी समीतियां :- इसे प्राथमिक कृषि साख समीति Primary Agriculture co-operative society (PACS) कहा जाता है। यह अल्प कालिन ऋण उपलब्ध कराती है। बिहार में इसकी कुल संख्या 6845 है।

(iii) भूमि विकास बैंक :- यह भूमि को गिरवी रखकर दीर्घ कालिन ऋण कृषि कार्य के लिए देती है।

(iv.) व्यवसायिक बैंक :- व्यवसायिक बैंकों के द्वारा किसानों द्वारा व्यवपारी दोनों को ऋण उपलब्ध कराया जाता है, कुल ऋण का 40% इसी यही बैंक देती है।

(v.) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक :- इसके द्वारा छोटे किसानों और कारीगरों को ऋण उपलब्ध कराया जाता है, देश में अभी 196 क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यरत है।

(vi) NABARD बताइए :- इसे राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के नाम से जाना जाता है, इसके द्वारा कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए व्यवसायिक बैंकों ग्रामीण बैंकों तथा अन्य संस्थानों को वित्तीय मदद की जाती है। 2000 में नाबार्ड के द्वारा अन्य संस्थाओं, 540 करोड़ की सहायता प्रदान किया गया।

(3) व्यवसायिक बैंक के प्रमुख कार्यों को विवेचना करें।

Ans :- हमारे देश में व्यावसायिक बैंक सभी बैंकों से अच्छा काम कर रहे हैं। व्यवसायिक बैंकों के उदाहरण :- SBI, CBI, इलाहाबाद बैंक, Punjab national Bank इत्यादि है।

व्यवसायिक बैंक चार मुख्य कार्यों को करते हैं।

(i.) जमा राशि को स्वीकार करना :- व्यवसायिक बैंक चार तरह से जमा राशि स्वीकार करती है। जैसे :- स्थायी जमा (Fixed Deposit), सुरक्षित जमा, चालू जमा, आवृति जमा इत्यादि।

EMI →
Expanded Monthly Installment

(ii.) ऋण प्रदान करना →: व्यवसायिक बैंक का दूसरा प्रमुख कार्य है किसान तथा व्यवसायियों को ऋण देना। इसके लिए बैंक, जमा राशि का उपयोग करती है तथा ग्राहकों से ब्याज भी लेती है।

(iii.) सामान्य उपयोगिता संबंधी कार्य →: व्यवसायिक बैंकों द्वारा ग्राहकों से संबंधित कई उपयोगी कार्य किए जाते हैं, जैसे →: (i.) तिजोरी रखने के लिए लॉकर की सुविधा देना, (ii.) ATM, कार्ड तथा Credit Card की सुविधा देना (iii.) चेक, ड्राफ्ट आदि की सुविधा देना।

(iv.) एजेंसी संबंधी कार्य →: आज व्यवसायिक बैंक एक एजेंसी के रूप में ~~सेवा~~ सेवा दे रही है। जैसे →: (a.) ऋण का किस्त (EMI) भुगतान की सेवा (b.) प्रतिभूति (Share) का क्रय, विक्रय (c.) राशियों का हस्तांतरण करना।

(4.) सहकारिता के मूल तत्व क्या है? राज्य के विकास में इसकी भूमिका का वर्णन करें।

Ans →: सहकारिता के तीन मूल तत्व हैं →
(i.) इस संगठन की सदस्यता स्वैच्छिक होती है लोग बिना किसी दबाव के इसके सदस्य बनते हैं (ii.) संगठन का प्रबंधन एवं संचालन लोकतांत्रिक आधार पर होता है अर्थात सभी सदस्यों को बराबर अवसर और अधिकार प्रदान किए जाते हैं (iii.) सहकारी संगठन का उद्देश्य समाज के हित को देखना है आर्थिक लाभ कमाना नहीं है।

राज्य के विकास में सहकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि बिहार में कृषि प्रधान राज्य है, यहां की 80% आबादी कृषि कार्य को करती है, और सहकारिता के द्वारा ही सहकारी समिति एक बैंक का मदद लेकर किसानों को उचित उपलब्ध कराया जाता है, जिससे किसान और कृषि का विकास होगा जो राज्य के विकास में भी योगदान देगें।

(5) स्वयं सहायता समूह में महिलाएं किस प्रकार अपनी अहम भूमिका निभाती है?

Ans → स्वयं सहायता समूह एक अनुपचारिक समूह है। जिसमें गांव के 15-20 व्यक्तियों (महिलाएं) शामिल होती है, ये महिलाएं आपस में मिलकर बैंक से Loan लेकर छोटे-मोटे गृह उद्योग को शुरू करती है जैसे पापड़ बनाना, टोकरी बनाना, खेत। ये संगठन महिलाओं को रोजगार भी देती है। जिससे महिला तथा उनके समाज का विकास होता है, इससे महिलाओं को आमदनी भी प्राप्त होती है जिससे वे आत्म निर्भर हो होती है कई स्वयं सहायता समूह ने बहुत अच्छा काम किया है जैसे आज SHG महिला सशक्तिकरण में भी योगदान देती है